अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थल
Mandir and other Religious places

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थल **Mandir and other Religious places**

अध्याय शीर्षक	मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थल
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Mandir and other Religious places**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थल **Mandir and other Religious places**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थल Mandir and other Religious places

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – मन्दिरों व अन्यों का संक्षिप्त वर्णन

मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थल Mandir and other Religious places

मन्दिर

<u>कैरदा मन्दिर</u>

बान्दा से महोबा जाने वाले मार्ग पर कैरदा गान्व है, जो बान्दा से 15 किलोमीटर और महोबा से 40 किलोमीटर दूर है। एक पक्की सड़क बान्दा और महोबा को जोड़ती है। गान्व की नींव करीब 900 साल पहले चन्देल काल में रखी गई थी। यहां एक तालाब है, जिसे खास पत्थरों से बनाया गया है। 1857ई0 में जब ब्रिटिश सेना इस गान्व में घुसी थी, गान्व वालों के साथ चार कुत्तों और उनकी मां ने गान्व से 1.5 किलोमीटर दूर लड़ाई लड़ी और अपनी जान कुर्बान कर दी थी। इस लड़ाई की याद में कैरदा गान्व में पहाड़ी की चोटी पर चार पत्थर के स्तम्भ स्थापित हैं।

<u>काली देवी का मन्दिर</u>

बान्दा में रेलवे स्टेशन को पार करके किले के पास बाबूलाल चौराहा बना हुआ है। यहां पर 1857 ईस्वी में मराठा शासक ने एक काली मन्दिर का निर्माण कराया था।

लोगों के कथनानुसार, एक मराठा शासक के साथ साक्षात् काली देवी चला करती थी। वह मराठा शासक कालिन्जर दुर्ग पर आक्रमण करने आया था, तभी किसी कारणवश राजा से देवी नाराज हो गई और उन्होंने साथ चलने से मना कर दिया। तब उक्त राजा ने काली देवी को यही प्रतिस्थापित कर दिया और आज भी काली देवी का मन्दिर है।

अन्य जनश्रुति के अनुसार, नवाब के समय कुछ बन्जारे काली देवी की प्रतिमा स्थापना हेतु लेकर कहीं जा रहे थे। रात होने पर उन्होने बैलगाड़ी से प्रतिमा को उतार कर नीचे रख दिया और सो गए। प्रातः काल ब्राह्म मुहूर्त में प्रस्थान करने लगे तो वह प्रतिमा को उठा ना पाए अतः वह प्रतिमा को यहीं छोड़कर चले गए। उसके पश्चात स्थानीय लोगों ने वहां पर एक छोटी सी मढ़िया बना दी।

यहां उस वक्त भयन्कर घनघोर और डरावना जन्गल था लेकिन एक रास्ता आने–जाने के लिए भी बना हुआ था। 1870ई0 के खसरे में राजकरण मेहता का नाम दर्ज है। 1942ई0 में विष्णुकरण मेहता जो उन्ही के रिश्तेदार थे, ने मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। 1947ई0 में कुछ व्यापारियों ने मिलकर (गोतीराम और रमाशंकर गुप्त) ने मन्दिर का पुनः जीर्णोद्धार कराया।

मन्दिर को शक्तिपीठों की तर्ज पर नए सिरे से बनाया गया है। इसके मुख्य द्वार में 11 मन्जिल है मुख्य चोटी पर पांच कलश स्थापित है। जैसा कि हमेशा होता है, पुजारी और प्रबन्ध समिति के बीच पूजा पाठ में आए हुए धन को लेकर, जमीन को लेकर विवाद हो गया और पूरा कैसे न्यायालय में चला गया। न्यायालय ने वर्तमान में (2022–23ई0) में एक रिसीवर नियुक्त किया हुआ है जो मन्दिर की सारी व्यवस्थाएं देखते हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद मन्दिर के इतिहास के बारे में जैसा कि अन्य पुरातत्व मान्यता वाली भावनाओं के बारे में है, इतिहास केवल जनश्रुति पर आधारित है, वास्तविकता क्या है किसी को पता नहीं।

यहां पर पूरे साल को वह आराधना करने वालों का तान्ता लगा ही रहता है।

<u>बामेश्वरी व बामेश्वर महादेव</u>

बामेश्वरी व बामेश्वर महादेव/ बमदेवेश्वर/ बामदेवेश्वर मन्दिर और पर्वत के बारे में कहा जाता है कि मन्दिर का नाम बामदेव ऋषि से पड़ा है, जो हिन्दू पौराणिक कथाओं में भगवान राम के समकालीन एक ऋषि थे। जनश्रुति है कि बामदेव का आश्रम एक पहाड़ी की तलहटी में था। बन्बेश्वर पहाड़ की खोह में एक बड़ा मन्दिर और पुराना शिवलिंग स्थित है।

बामेश्वरी व बामेश्वर महादेव के मन्दिर, पहाड़ के विपरीत दिशा में दक्षिण पश्चिम में स्थित है। दोनों पूजा स्थल पहाड़ के ढलान पर स्थित हैं, जहां पर सीढ़ियों से चढ़कर पहुंचा जा सकता है। सीढ़ियों के दोनों तरफ छोटे–छोटे मन्दिर व पुजारियों के घर बने हुए हैं।(1900 ईस्वी) मन्दिरों का स्थापत्य कला बहुत अच्छा है और कुछ

हिस्से तो प्राचीन कालीन लगते हैं। पहाड़ के बहुत बड़े पत्थर को लिंग के आकार में तराशा गया है जो कि ऋषि बामदेव की परंपरा के अनुसार बनाया गया है और बान्दा का नाम सम्भवतः इसी से उत्पन्न हुआ है।

माहेश्वरी देवी मन्दिर

यह मन्दिर बान्दा शहर के बीच चौक बाजार में स्थित है। मन्दिर में कई देवियों और देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित कर दी गई हैं।

नित्य दर्शन को सैकड़ों की सन्ख्या में लोग आते हैं। शारदीय व चौत्र नवरात्रि को यहां पर विशाल मेला लगता है। दूर–दूर से लोग माथा टेकने के लिए आते हैं।

बान्दा के सबसे पुराने बाशिन्दे जो यहां आदिकाल से बसे हुए थे कोल और भील माने गए हैं जिन्होने पहाड़ की तलहटी के नीचे एक छोटा गान्व बसाया हुआ था जो खुटला के नाम से जाना जाता था। बान्दा में खुटला के नाम से एक मोहल्ला बसा हुआ है और आज भी विद्यमान है। उनके धार्मिक नेता व दिग्दर्शन करने वाले नेता एक दुबे ब्राह्मण थे। वे शिकारी भ्रमण में भी उनके नेता थे।

कोल और भील (कथित लुटेरों) का समूह दुबे ब्राह्मण को मान्यता देता था और वह उनको अपना मुखिया मानते थे। शिकारी भ्रमण से पहले कोल और भील अपने इस मन्दिर में पूजा करते थे।

कथित लुटेरों– पराजित व गरीब राजा व समाज को कथित रुप से लुटेरा ही कहा जाता है।

बुन्देलखण्ड के बान्दा में स्थित महेश्वरी देवी मन्दिर एक ऐतिहासिक मन्दिर है जो स्थानीय आदिवासी समुदायों से गहराई से जुड़ा हुआ है। ये समुदाय परम्परागत रूप से देवी के सन्रक्षक, पुजारी या रक्षक के रूप में कार्य करते रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से, यह सम्बन्ध स्वदेशी अनुष्ठानों और मुख्यधारा की शाक्त परम्पराओं के एकीकरण को दर्शाता है, जो साझा आध्यात्मिक स्थान और स्थानीय सन्रक्षण पर बल देता है।

ऐतिहासिक रूप से, बान्दा क्षेत्र में महेश्वरी देवी मन्दिर की पूजा और रखरखाव का प्रबन्धन स्थानीय आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से कोल जनजाति द्वारा किया जाता था, अब नहीं है।

क्षेत्रीय देवताओं के व्यापक व हिन्दू विश्वास प्रणालियों में ऐतिहासिक सान्स्कृतिक–एकीकरण, विशेष रूप से वीर व शाक्तवाद को उजागर करता है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के बान्दा जिले में स्थित यह मन्दिर स्थानीय आदिवासी आबादी और बाद में आए व्यापक समुदाय, दोनों के लिए एक केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य करता है।

आदिवासियों का मूल मन्दिर होने के कारण, आदिवासियों को मन्दिर में विशिष्ट अनुष्ठानों का नेतृत्व करने या उनमें भाग लेने का पारंपरिक अधिकार प्राप्त है। इसे आदिवासी और बाद में आए कथित मुख्यधारा की धार्मिक प्रथाओं के एक अनूठे मिश्रण के रूप में चिह्नित करता है।

यह मन्दिर स्वदेशी आस्था और शक्ति की पारंपरिक हिन्दू कथाओं के सन्गम का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें आदिवासी इसके रखरखाव और पूजा में ऐतिहासिक सेतु का काम करते हैं।
रु1

कालिन्जर किला

प्राचीन कालिन्जर किला में स्थित मन्दिर समूह, शहर से घूमने के लिए सबसे प्रसिद्ध जगह है। यह बान्दा के दक्षिण में स्थित है और जिसका उल्लेख महाभारत में है।

सन्कट मोचन मन्दिर

यह मन्दिर बान्दा महोबा सड़क पर कचहरी रोड पर स्थित है।

केन नदी स्वतः विस्तारित है।

गुढ़ा के हनुमान जी

यह मन्दिर गुढ़ा कलां में स्थित है और बान्दा से लगभग 40 किमी दूर है।

अंगलेश्वरी देवी

खत्री पहाड़ (विंध्यवासिनी) मन्दिर   है। श्याधा में खत्री पहाड़ नाम की एक पहाड़ी की चोटी पर एक और मन्दिर भी है, जो शहर से लगभग 24 किमी दूर स्थित है। यह मन्दिर देवी अंगलेश्वरी (विन्ध्यवासिनी) को समर्पित है।

जैन मन्दिर

बान्दा शहर का एक ऐतिहासिक मन्दिर। यह छोटी बाज़ार के पास स्थित है।

सिन्धी मन्दिर

चर्च

बान्दा शहर में दो चर्च स्थित है

एक   सेन्ट पैट्रिक चर्च रोडवेज बस स्टैंड पुराना कानपुर रोड कैसे पर स्थित है।

दो   सेन्ट पॉल चर्च चिल्ला रोड पर स्थित है।

उत्तर प्रदेश के बान्दा में चर्च का इतिहास 19वीं शताब्दी के आरम्भ से जुड़ा है, जिसमें ऐतिहासिक येलो चर्च (स्थापना 1835) ब्रिटिश काल की एक प्रमुख भवन है। बाद में, 1931 में सैन्य और रेलवे कर्मियों के लिए सेन्ट पैट्रिक चर्च की स्थापना की गई, जो इस क्षेत्र में कैथोलिक समुदाय का केन्द्र बन गया।

अन्ग्रेज आफिसरों के लिए अलग व भारतीयों (जो सेना में कार्यरत सैन्य कर्मी व रेल कर्मचारी) के लिए धार्मिक भेदभाव के तहत अलग चर्च बनाए गए।

प्रमुख ऐतिहासिक गिरजाघर और महत्वपूर्ण स्थल

बेथेल चर्च

उत्तर प्रदेश के बान्दा में बेथेल चर्च एसोसिएशन एक रजिस्टर्ड छळ८/चर्च सन्गठन है, जो इंदिरा नगर के सामने स्थित है। यह बान्दा (पिन 210001) के स्थानीय समुदाय की सेवा करता है और इस क्षेत्र के गैर–लाभकारी सन्गठनों में सूचीबद्ध है।

बेथेल चर्च एसोसिएशन, स्थान इंदिरा नगर के सामने, बान्दा , उत्तर प्रदेश।

सेन्ट पॉल चर्च, बान्दा

सेन्ट पॉल चर्च, जिसे लाल गिरजा या रेड चर्च के नाम से भी जाना जाता है

बान्दा का दूसरा सबसे पुराना चर्च है। यह चर्च 1911 में स्थापित किया गया था। इस गॉथिक रिवाइवल शैली की इमारत में सर्विस के समय 250 उपासक बैठ सकते हैं। यह चर्च शहर का सबसे बड़ा चर्च है और एक सदी से भी ज्यादा समय से पूजा का केन्द्र है। यह चर्च शहर के ब्रिटिश और भारतीय एंग्लिकन ईसाइयों की आध्यात्मिक ज़रूरतों

को पूरा करने के लिए स्थापित किया गया था। सेन्ट पॉल चर्च बान्दा ज़िले के लिए एक महत्वपूर्ण विरासत है, क्योंकि इसने बान्दा को औपनिवेशिक ब्रिटिश छावनी से एक विकासशील शहर बनते देखा है। यह चर्च वर्तमान में लखनऊ के ब्छप् डायोसीज़ के नियंत्रण में है।

सेन्ट जॉर्ज चर्च बान्दा

सेन्ट जॉर्ज चर्च, जिसे पीला गिरजा या येलो चर्च भी कहा जाता है या नाम से भी जाना जाता है। 1835 ई0 में स्थापित येलो चर्च(सेन्ट जार्ज चर्च) बान्दा का सबसे प्रसिद्ध और सबसे पुराना चर्च है। सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध चर्च के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह इमारत इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण ब्रिटिश स्थापत्य और धार्मिक प्रभाव का प्रतिनिधित्व करती है। कुछ ऐसे अभिलेख मिले हैं जो साबित करते हैं कि 1809 ईस्वी से पहले बान्दा में ईसाई धर्म था। येलो चर्च ब्रिटिश काल के के शुरुआती दिनों में बान्दा में रहने वाले एंग्लो–कैथोलिक (एंग्लिकन) अंग्रेजों और उनके परिवारों की नियमित प्रार्थनाओं के लिए चर्च ऑफ इंग्लैंड के तहत चर्च ऑफ इंडिया (ब्छप्) द्वारा बनाया गया था। पहले, चर्च कलकत्ता के डायोसीज़ के अधीन था, लेकिन 1893 के बाद कलकत्ता डायोसीज़ से लखनऊ का एक नया डायोसीज़ बनाया गया। यह चर्च ब्रिटिश सन्रक्षक सन्त जॉर्ज द मार्टियर को समर्पित है। चर्च में बान्दा में सेवा करने वाले ब्रिटिश अधिकारियों के कई स्मारक हैं। येलो चर्च बुन्देलखण्ड में ब्रिटिश वास्तुकला और धर्म का सबसे अच्छा प्रतीक है।



इस चर्च को चूने और ईंटों से बना है जिसे इलाहाबाद से मन्गवाया गया था। इस चर्च की छत के गार्डर कास्ट आयरन से बने हैं। जन्ग से मुक्त 1835 ई0 में स्थापित छत व पुरानी खिड़कियां बेहतरीन धातुकर्म प्रतिभा की कहानी बयान् करती है। चूने और ईंटों से बना है जिसे इलाहाबाद से मन्गवाया गया था। 1835 ई0 में स्थापित, खिड़की /विंडो पैन, जो तब बेल्जियम से आयात किए गए थे, को बदला नहीं गया है।

यह चर्च खास इटैलियन स्टाइल में बना है, जिसमें कोनिकल टॉप और लंबी खिड़कियां हैं।
कैंपस के अन्दर इस सेन्ट जॉर्ज चर्च बान्दा (जिसे पीला गिरजा या येलो चर्च भी कहा जाता है) में नॉर्वेजियन मूल निवासियों की तीन कब्रें हैं।

कुछ समय बाद, अन्ग्रेज बच्चों के अध्ययन के लिए चर्च के परिसर में सेन्ट जॉर्जेस स्कूल एन्ड कॉलेज नाम से एक कॉलेज शुरू किया गया जो कालातीत हो गया। 2005ई0 (लगभग) में यह कॉलेज फिर से शुरू किया गया है।

1857 के विद्रोह के दौरान, चर्च को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था। यह वैसा ही खड़ा है जैसा यह था। हिन्दुओं की सहिष्णुता का यह अद्वितीय उदाहरण है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

15 जून 1857 को, भारतीय विद्रोहियों ने जॉइंट मजिस्ट्रेट हेनरी एडमंड कॉकरेल को मार डाला। 14 अप्रैल 1858 को, जनरल व्हिटलॉक ने विद्रोहियों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई की, जिसमें तीन हज़ार विद्रोही मारे गए। कॉकरेल को चर्च परिसर के अंदर दफनाया गया था।

सेन्ट पैट्रिक चर्च

सेन्ट पैट्रिक चर्च (स्थापना 1931) कानपुर रोड बस स्टैन्ड पर स्थित यह चर्च सैनिकों और रेलवे कर्मचारियों की बढ़ती सन्ख्या को ध्यान में रखते हुए बनाया गया था। सैन्य अधिकारियों द्वारा पट्टे पर दी गई भूमि पर बिशप ए. पोल ने 1931 में इसका भ्रमण किया था।

1880 में धर्म परिवर्तन करके या फिर बाद में धर्म परिवर्तित सैनिकों के लिए एक चौपल का निर्माण किया गया और इसे पवित्र क्रॉस को समर्पित किया गया। एक बड़ी इमारत की आवश्यकता के कारण, सेन्ट पैट्रिक चर्च का निर्माण हुआ। इस पल्ली में एक पादरी का घर और हॉल भी शामिल था, जो अब सेन्ट पैट्रिक नर्सरी स्कूल के रूप में कार्यरत है।

येलो चर्च और सेन्ट पैट्रिक चर्च दोनों ही इलाहाबाद के कैथोलिक धर्मप्रान्त के अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

यह क्षेत्र 2018 में गठित सेवेन्थ–डे एडवेन्टिस्टों के मध्य उत्तर प्रदेश क्षेत्र के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड प्रदेश क्षेत्र का भी हिस्सा है।

नॉर्वेजियन–इन्लिश कब्रिस्तान

पिछले 200 सालों से बान्दा में अन्ग्रेज़ों की आत्माएँ शान्ति से यहाँ विश्राम कर रही हैं। बान्दा के कालूकुवां–फ्लाईओवर रोड पर स्थित यह कब्रिस्तान भारत पर ब्रिटिश शासन के दौरान अन्ग्रेजी गौरव के इतिहास को समेटे हुए है। यह लगभग दो शताब्दियों से बान्दा और उसके भूतपूर्व और वर्तमान निवासियों के जीवन और उस अवधि के दौरान घटित सभी घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी है। चाहे वह 1857 का विद्रोह हो या नवाब बान्दा काल या फिर भारत का स्वतन्त्रता सन्ग्राम, वे सभी यादें आज भी इस ज़मीन के टुकड़े पर सन्जोए हुए हैं जो इतना स्थिर और कमतर महसूस होता है। लेकिन यह सब कम से कम भारत जैसे देश में इसके महत्व को कम नहीं कर सकता जहाँ कब्रों का मतलब पवित्र होता है।

सेन्ट जॉर्ज चर्च बान्दा (जिसे पीला गिरजा या येलो चर्च भी कहा जाता है) के कैंपस के अन्दर में नॉर्वेजियन मूल निवासियों की तीन कब्रें हैं।

जामा–मस्जिद

शहर की सबसे पुरानी मस्जिदों में से एक है।

नवाब टैंक

नवाब टैंक, जो बान्दा में पानी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बनाया गया था, बान्दा से लगभग 3 किमी दक्षिण में स्थित है। यह टैंक बान्दा के नवाब ने बनवाया था, इसलिए इसे नवाब टैंक के नाम से जाना जाता है।

भूरागढ़ किला

केन नदी के उस पार भूरगढ़ किले के खन्डहर हैं, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे 17वीं शताब्दी में राजा गुमान सिन्ह ने भूरे पत्थरों से बनवाया था। यह स्थान स्वतन्त्रता सन्ग्राम के दौरान महत्वपूर्ण था। इस स्थान पर नटबली का मेला आयोजित किया जाता है। यह किला केन नदी के किनारे स्थित है। भूरागढ़ किले का ऐतिहासिक महत्व बुंदेला शासन से सन्बन्धित है, जगत राय के पुत्र कीरत सिन्ह ने 1746 ईस्वी में भूरागढ़ किले की मरम्मत करवाई थी। नोने अर्जुन सिन्ह किले के कार्यवाहक थे।

भूरागढ़ किला केन नदी के किनारे स्थित है अतः किले से सूर्यास्त देखना एक खूबसूरत अनुभव है। भूरागढ़ किले का ऐतिहासिक महत्व बुंदेला शासन और महाराजा छत्रसाल के पुत्रों हृदय शाह और जगत राय से जुड़ा है।

मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थल **Mandir and other Religious places**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

इतिहास में चेक करे एड करे

नवाब जुल्फिकार बहादुर ने बान्दा प्रशासन को नवीनीकृत करने में मदद की। उन्होंने कालिन्जर भट्टशाही को बान्दा रेलवे स्टेशन के सामने, चरखारी भट्टशाही, को छोटी बाज़ार में और झांसी भट्टशाही को भूरागढ़ किले में तैनात किया, जिससे बान्दा उत्तरी मराठा प्रभुत्व का केन्द्र बन गया।

1857 का भारतीय विद्रोह 14 जून को शुरू हुआ। बान्दा में इसका नेतृत्व नवाब अली बहादुर द्वि ने किया। यह सन्घर्ष उम्मीद से कहीं ज्यादा भयंकर था और इलाहाबाद, कानपुर और बिहार के क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों से लड़ने में नवाब का साथ दिया। 15 जून 1857 को, क्रांतिकारियों ने जॉइंट मजिस्ट्रेट कॉकरेल को मार डाला। 16 अप्रैल 1858 को, व्हिटलॉक बान्दा आया और बान्दा की मराठा सेना से लड़ा, जिसे दक्षिण से तात्या और पूर्व से कालिन्जर भट्टों का समर्थन प्राप्त था। इस युद्ध के दौरान किले में लगभग 3000 क्रांतिकारी मारे गए। सरबाई के नटों (जो कलाबाज़ी के करतब दिखाते हैं) ने इस युद्ध में अपने प्राणों की आहुति दी। उनकी कब्रें किले के अंदर पाई जाती हैं।

नवाब को बान्दा में उनकी सम्पत्ति से हटा दिया गया, कैद कर लिया गया और इन्दौर जेल भेज दिया गया। उनकी बान्दा की सभी रियासतें राय बहादुर मानवेन्द्र सिन्ह अवस्थी को दे दी गईं, जो कालिन्जर भट्टशाही के एक महत्वपूर्ण मन्त्री थे।

सौजन्य / सन्दर्भ / साभार
(विरासत) सेन्ट जॉर्ज चर्च उर्फ येलो चर्च, बान्दा – उत्तर प्रदेश
(इतिहास) नॉर्वेजियन इन्ग्लिश कब्रिस्तान
बान्दा हिस्ट्री
त्मसंजपवद इमजूममद ˙कपअेंप ˙दक ऊीर्मीूंतप उंदकपत पद इंदकं ˙पिेजवतल ˙दक इंबाहतवनदक

मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थल Mandir and other Religious places